मुख्य बिंदु

मुक्ति का सृजन

अच्छी-बुरी आदतें नहीं होतीं, आदत बुरी होती है। कोई आदमी शराब पीने की आदत से भरा है, तो हम कहते हैं, बुरी आदत है। और कोई आदमी रोज उठ कर प्रार्थना करता है, तो हम कहते हैं, अच्छी आदत है। अच्छी आदतें होतीं ही नहीं

शांडिल्य ने भक्ति को दो खंडों में बांटा। एक साधनरूप भक्ति, एक साध्यरूप भक्ति। साधनरूप भक्ति को उन्होंने गौणी-भक्ति कहा और साध्यरूप भक्ति को पराभक्ति। उस विभाजन की ही गहराई और विस्तार में आज के सूत्र हैं।

अक्सर यह भूल हो जाती है कि साधन साध्य समझ लिए जाते हैं। तब साधन ही बाधक हो जाता है। जो नाव तुम्हें उस पार ले जाती है, अगर उस नाव को ही पकड़ लिया, तो उस पार तुम कभी न पहुंच पाओगे। उस पार पहुंचना है, तो इस पार तो नाव पकड़नी होगी, उस पार पहुंच कर नाव छोड़ देनी होगी। नाव अगर छोड़ी नहीं, सोचा कि जो नाव इस पार ले आई है, जिसका इतना आभार है, उसे पकड़ कर बैठ गए, तो वही नाव बाधा हो जाएगी।

श्री अरविंद ने कहा है : प्रारंभ में जो साधक है वही अंत में बाधक हो जाता है। और यह बिलकुल स्वाभाविक है कि जिससे हमें इतना सहारा मिला हो, जिसके आधार से हमें इतने आनंद की उपलब्धि हुई हो, जिसके कारण हमारी प्यास तृप्ति के करीब आई हो, उससे हम बंध जाएं, उससे मोह पैदा हो जाए, उससे आसक्ति बन जाए। संसार की ही आसक्ति बाधा नहीं है, आसक्ति कहीं भी हो तो बाधा है। इसलिए इस विवेचन में जाना अत्यंत आवश्यक है।

कीर्तन है, भजन है, श्रवण है, सत्संग है—सब गौणी-भक्ति है। सत्संग ही करते रहे और सत्संग में ही डूबे रहे और कभी उसके पार न गए तो सत्संग का सार न हुआ। तो फिर तुम सत्संग की आसक्ति में पड़ गए। वह भी एक लत हो गई। और आदत अच्छी हो कि बुरी, आदत बुरी ही होती है। अच्छी-बुरी

आदतें नहीं होतीं, आदत बुरी होती है। कोई आदमी शराब पीने की आदत से भरा है, तो हम कहते हैं, बुरी आदत है। और कोई आदमी रोज उठ कर प्रार्थना करता है, तो हम कहते हैं, अच्छी आदत है। अच्छी आदतें होतीं ही नहीं। अगर सुबह रोज उठ कर प्रार्थना करने वाला आदमी जिंदगी भर यही करता रहे और ऐसी घड़ी न आ पाए उसके जीवन में जब वह प्रार्थना से मुक्त हो जाए तो समझना कि यह एक और तरह की शराब हुई। कुछ बहुत फर्क न हुआ।

एक दिन तुम प्रार्थना नहीं करते हो तो दिन भर बेचैनी मालूम होती है। प्रार्थना नहीं करते हो तो लगता है कुछ चूक गया, कुछ खो गया, कुछ कमी-कमी, कुछ रिक्त-रिक्त, कुछ अभाव। यही तो शराबी को होता है। यही धूम्रपान करने वाले को होता है। यही चाय-कॉफी पीने वाले को होता है। फर्क तुममें और उसमें क्या हुआ? दोनों ही आदत के गुलाम हो गए। उसकी आदत शरीर को नुकसान पहुंचाती है, तुम्हारी आदत और भी खतरनाक है, तुम्हारी आत्मा को नुकसान पहुंचा रही है। जिनको तुम बुरी आदतें कहते हो उनकी सीमा तो शरीर है, और जिनको तुम अच्छी आदतें कहते हो वे तुम्हारी आत्मा को भी विकृत कर जाती हैं।

ध्यान रखना है साधक को, उस अवस्था में पहुंचना है जहां सब आदतें चली जाएंगी। जहां सब आदतें चली जाती हैं वहां स्वभाव का आविर्भाव होता है। जब तक आदत है, स्वभाव दबा रहता है। आदत स्वभाव का धोखा देती रहती है। झूठा सिक्का असली सिक्के को दबाए बैठा रहता है। तुमने देखा, अर्थशास्त्र का नियम है कि झूठे सिक्के असली सिक्कों को चलन के बाहर कर देते हैं। तुम्हारे खीसे में अगर एक दस का नोट है असली और एक दस का नोट है नकली, तो तुम पहले नकली को चलाओगे। स्वाभाविक। असली को बचाओगे। असली तो कभी भी चल जाएगा। नकली निकल जाए! इसलिए असली सिक्के चलन के बाहर हो जाते हैं। तिजोड़ियों में बंद हो जाते हैं। नकली सिक्के बाजार में चलते रहते हैं। तुमने किसी पान वाले को चला दिया,

मुक्ति कोई निष्क्रिय अवस्था नहीं है, जैसा कि अनेक लोगों ने तुम्हें समझाया है। मुक्ति का अर्थ यह नहीं है कि तुम पंगु और काहिल होकर और अपने हाथ से अपने जीवन को पक्षाघात लगा कर किसी पहाड़ की गुफा में बैठ गए। वह आत्मघात है, मुक्ति नहीं

पान वाले को जैसे ही समझ आएगी कि नकली है, वह जल्दी से चलाने की कोशिश में लग जाएगा। नकली चलता है, असली रुक जाता है।

और यही जीवन की अवस्था है। यह अर्थशास्त्र का ही नियम नहीं है, यह तुम्हारे आत्यंतिक अध्यात्म का भी नियम है। अगर आदत तुम्हें पकड़ गई, तो स्वभाव का चलन बंद हो जाता है, आदत चलती रहती है। और आदत झूठी है, कृत्रिम है, ऊपर से आरोपित है, सीखी है। किसी ने किसी के साथ रह कर सिगरेट पीना सीख लिया है, तुमने किसी के साथ रह कर प्रार्थना करनी सीख ली। सिगरेट पीना भी बाहर से आया, प्रार्थना करनी भी बाहर से आई। तुम्हारे भीतर को कब अवसर दोगे? तुम्हारे भीतर जो पड़ा है, कब उमगेगा? कब उसे अंकुरित होने दोगे?

इसलिए साधन को खयाल रखना साधन ही है। उसे छाती से मत लगा लेना। उसी पर मत अटक जाना। साधन कितना ही प्यारा हो!

ऐसा समझो कि तुम बीमार थे, और बड़े रुग्ण थे, मरण-शय्या पर पड़े थे, और किसी औषधि ने तुम्हारे प्राण बचा लिए। अब क्या इस औषधि को जीवन भर पीते ही रहोगे? बीमारी चली गई, औषधि भी जानी चाहिए। जब व्याधि ही चली गई, तो औषधि भी जानी चाहिए।

अगर तुम कहो कि जिस व्याधि से छुड़ाया इस औषधि ने, इतनी महाव्याधि से छुड़ाया इस औषधि ने, इसको अब मैं छोड़ने वाला नहीं! ऐसी कल्याणकारी औषधि को मैं कैसे छोड़ सकता हूं! अब तो इसे छाती से लगा कर रखूंगा। अब तो इसकी पूजा करूंगा। अब तो सुबह-शाम इसका सेवन करूंगा; न खुद ही करूंगा बल्कि औरों को भी कराऊंगा। ऐसी महाकल्याणकारी रामबाण औषधि! अब तुम उपद्रव में पड़े। तुमने औषधि को भी व्याधि बना लिया।

साधन से छूटना है। तभी साध्य उपलब्ध होगा। गौणी-भक्ति पराभक्ति के लिए साधन मात्र है, सीढ़ी मात्र है। उपयोग कर लो, फिर भूल जाओ। जिस क्षण भूल सकोगे, उसी क्षण गीत गाने की बेला आएगी।

बादल घिर आए, गीत की बेला आई।

आज गगन की सूनी छाती
भावों से भर आई,
चपला के पांवों की आहट
आज पवन ने पाई,
डोल रहे हैं बोल न जिनके
मुख में विधि ने डाले,
बादल घिर आए, गीत की बेला आई।

बिजली की अलकों ने अंबर
के कंधों को घेरा,
मन बरबस यह पूछ उठा है
कौन, कहां पर मेरा?
आज धरणि के आंसू सावन
के मोती बन बहुरे,
घन छाए, मन के मीत की बेला आई।
बादल घिर आए, गीत की बेला आई।

चातक ने जल की बूंदों में
स्वाद अमृत का पाया,
आकाशी शिखरों से किसने
सुख का राग सुनाया,
आज करुण सबसे पृथ्वी के
आंगन में एकाकी,
बादल घिर आए, प्रीति की बेला आई।

बादल घिर आए, गीत की बेला आई।

आज अधर की मधु-मदिरा में
डूब अधर जो पाते,
इन रसहीन पदों को क्योंकर
वे फिर-फिर दुहराते
मैं न जहां पहुंचूंगा, मेरे
शब्द पहुंच जाएंगे,
घन छाए, मन की जीत की बेला आई।
बादल घिर आए, गीत की बेला आई।

गीत तुम्हारे भीतर पड़ा है—तुम्हारे स्वभाव का गीत। और जब तक तुम गा न लोगे, तब तक तुम छूटोगे नहीं। मुक्ति का अर्थ क्या होता है? मुक्ति का अर्थ होता है : तुमने अपनी नियति पा ली। तुम जो होने को पैदा हुए थे, हो गए। तभी मुक्ति है। मुक्ति कोई निष्क्रिय अवस्था नहीं है, जैसा कि अनेक लोगों ने तुम्हें समझाया है। मुक्ति का अर्थ यह नहीं है कि तुम पंगु और काहिल होकर और अपने हाथ से अपने जीवन को पक्षाघात लगा कर किसी पहाड़ की गुफा में बैठ गए। वह आत्मघात है, मुक्ति नहीं। मुक्ति का मौलिक अर्थ होता है : तुम्हारे भीतर जो गीत पड़ा था, जिसे गाने को तुम आए थे, उसे तुमने गा लिया। मुक्ति सृजनात्मक है, निष्क्रिय नहीं। और जब तक कोई सृजनात्मक रूप से प्रकट न हो जाए, तब तक आनंद नहीं उपजता।

स्मरण रखना, जैसे प्रत्येक बीज अपनी छाती में फूलों को छिपाए है और जब तक पौधा न बने और वृक्ष बड़ा न हो और फूल न खिलें, तब तक बीज उदास रहेगा। तब तक बीज बेचैन रहेगा। तब तक बीज को विश्राम कहां?

मेरे पास लोग आते हैं, वे कहते हैं, चित्त बड़ा बेचैन है, शांति का उपाय बता दें।

चित्त बेचैन है क्योंकि तुम्हारा बीज अभी फूटा नहीं। और अगर तुम्हें शांति का कोई उपाय बता रहा हो तो वह तुम्हारा दुश्मन है। तुम्हें उपाय बताया जाना चाहिए सृजन का, शांति का नहीं।

शांति तो सृजन की छाया है। लेकिन तुम्हें सदियों से यही सिखाया गया है। तुम्हारे तथाकथित महात्माओं ने तुम्हें यही बताया है—मुड़ जाओ जिंदगी से। बीजों को मंत्र सिखा दिए हैं ताकि वे बीज ही रहने में शांत रहें। बैठ जाओ जाकर पत्थर बन कर। आंख बंद कर लो। विस्मरण कर दो सब।

लेकिन ध्यान रखो, तुम लौट-लौट कर आओगे। परमात्मा तुम्हें तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक तुम अपना गीत न गा लो। जब तक तुम्हारे भीतर पड़े हुए फूल, छिपे हुए फूल प्रकट न हो जाएं। जब तक तुम सुगंध न बिखेरो। जब तक तुम्हारे रंग आकाश में आकर खुल न जाएं। जब तक तुम आकाश के साथ नाच न लो। तुम्हारे भीतर जो दबा पड़ा है, उसके पूर्ण प्रकट हो जाने पर मुक्ति है। जब बीज वृक्ष बन जाता है और वृक्ष में फूल लग जाते हैं, बीज मुक्त हो गया। अब कोई बेचैनी न रही। अब सब तरफ शांति छा जाती है।

तुमने भी इसे अनुभव किया है, लेकिन तुमने इस पर विचार नहीं किया। जब भी तुम कुछ सृजनात्मक करते हो तब तक अपूर्व आनंद का भाव उठता है। तुमने एक मूर्ति बना ली, या तुमने एक चित्र रंग डाला, या कुछ और—हजार काम हैं दुनिया में—तुमने कोई काम कर लिया जो तुम करना चाहते थे, तब उसके पीछे एक शांति अपने आप चली आती है। जब कृत्य का तूफान चला

परमात्मा तुम्हें तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक तुम अपना गीत न गा लो। जब तक तुम्हारे भीतर पड़े हुए फूल, छिपे हुए फूल प्रकट न हो जाएं। जब तक तुम सुगंध न बिखेरो। जब तक तुम्हारे रंग आकाश में आकर खुल न जाएं। जब तक तुम आकाश के साथ नाच न लो

जाता है, तो पीछे से शांति छा जाती है। लेकिन कृत्य का तूफान उठना ही चाहिए। इसलिए मैं पक्ष में नहीं हूं कि कोई संन्यासी संसार छोड़ कर भाग जाए। संसार है अवसर अभिव्यक्ति का। उसे छोड़ कर भाग गए तो तुम वही बीज हो जो जमीन छोड़ कर भाग गया। बैठ जाएगा बीज किसी गुफा में, लेकिन पत्थरों में बीज नहीं ऊगा करते। भूमि चाहिए, नर्म भूमि चाहिए। अवसर चाहिए। जहां वसंत आता हो, जहां भूमि कोमल हो, वहां गिरो, वहां टूटो, वहां उमगो। मुक्ति है सृजनात्मक।

मनुष्य-जाति के धर्मों ने सृजन को बहुत मूल्य नहीं दिया, इसलिए पृथ्वी धार्मिक नहीं हो पाई। सृजन का जितना मूल्य बढ़ेगा, उतनी पृथ्वी ज्यादा धार्मिक हो पाएगी। इसलिए जितने सृजनात्मक लोग हैं, आमतौर से मंदिरों और मस्जिदों में नहीं जाते। वहां काहिलों और सुस्तों की भीड़ इकट्ठी हा गई है। जिन्हें कुछ करना है, वे वहां नहीं जाते। जिन्हें जीवन में कुछ होना है, वे वहां नहीं जाते। और जब काहिल और सुस्त इकट्ठे हो जाते हैं, लंगड़े, लूले, अंधे इकट्ठे हो जाते हैं, मुर्दों की भीड़ लग जाती है, तो जाने-अनजाने हमारे मंदिर-मस्जिद और गिरजे मरघट हो गए हैं। वहां जिंदगी खिलती नहीं, वहां जिंदगी नाचती नहीं, वहां जिंदगी प्रकट नहीं होती। ध्यान रखना।

बादल घिर आए, गीत की बेला आई।
घन छाए, मन के मीत की बेला आई।

मनुष्य-जाति के धर्मों ने सृजन को बहुत मूल्य नहीं दिया, इसलिए पृथ्वी धार्मिक नहीं हो पाई। सृजन का जितना मूल्य बढ़ेगा, उतनी पृथ्वी ज्यादा धार्मिक हो पाएगी।

घन छाए, मन की जीत की बेला आई।

बादल घिर आए, गीत की बेला आई।

गीत की बेला कब आएगी? जब तुम्हारा स्वभाव प्रकट होगा। स्वभाव दबा पड़ा है बहुत से कूड़े-कर्कट में। उस कूड़े-कर्कट को छांटना है।

इस छांटने में दो खतरे हैं। एक खतरा है कि साधन, जिससे तुम इस कूड़ा-कर्कट को छांटोगे, कहीं साध्य न हो जाए। दूसरा खतरा है, इस डर से कि कहीं साधन साध्य न हो जाए, तुम साधन का उपयोग ही न करो। तो कूड़ा-कर्कट न छंटेगा।

और इन दो ही खतरों में लोग बंट गए हैं। कुछ हैं जो साधन से डरते हैं; जो कहते हैं, साधन के उपयोग में खतरा है, नाव में बैठना ही मत, क्योंकि जो बैठ गए वे फिर उतरते नहीं। और एक हैं जो कहते हैं, नाव में बिना बैठे तो हम पार कैसे जाएंगे? नाव ही हमें इस पार ले आई। अब हम उतरें कैसे! अब हम उतरेंगे नहीं। कुछ हैं जो साधन से बचते हैं—वे इसी किनारे रह जाते हैं। कुछ हैं जो साधन का उपयोग करते हैं, लेकिन नाव में ही अटक जाते हैं—उस पार वे भी नहीं पहुंच पाते। दोनों ही नहीं पहुंच पाते।

उस पार कौन पहुंचता है?

जो साधन का साधन की तरह उपयोग कर लेता है। और जब जरूरत पूरी हो जाती है तो चुपचाप उतर कर चल पड़ता है। पीछे लौट कर भी नहीं देखता। बीमार होता है तो औषधि का प्रयोग करता है, बीमारी गई तो औषधि को विदा कर देता है। फिर औषधि को नहीं पकड़ लेता।

ऐसा ही समझो कि तुम्हारे पैर में एक कांटा लगा है, उसे निकालने को तुम दूसरे कांटे का उपयोग कर लेते हो। लेकिन जब दोनों कांटे आ गए हाथ में—गड़ा हुआ कांटा भी निकल आया—तो फिर तुम, जिस कांटे ने गड़े हुए कांटे को निकाला, उसे बचा थोड़े ही लेते हो! उसे घाव में थोड़े ही रख देते हो कि इसकी बड़ी कृपा है, अब इसको रख ले अपने पैर में। तुम दोनों को फेंक देते हो।

साधन भी फेंका जाना है। इसीलिए उसे गौण कहा है। और जब साधन चला जाएगा, तभी साध्य का आविर्भाव है।

– ओशो

अथातो भक्ति जिज्ञासा,
दूसरा भाग, उन्नतीसवां प्रवचन
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)